मधुबन ओम् शान्ति अंक 391 फरवरी 2025

पत्र-पुष्प

"एकता और एकाग्रता के साथ बाह्यमुखता के सर्व आकर्षणों से मुक्त एकान्तप्रिय बनो"

(दादी जी – 20-01-2025)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा समाने की शक्ति द्वारा एकमत का वातावरण बनाने वाले, दृष्टान्त स्वरूप निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी परमात्म नूरे रत्न ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार हो

बाद समाचार - जनवरी मास में सभी ने बहुत अच्छी तपस्या की है, हर एक ने ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का लक्ष्य रख प्रकृति सहित पूरे विश्व को शान्ति और शक्ति की सकाश देने की सेवा भी की है। वर्तमान समय प्रमाण अभी मन-बुद्धि की एकाग्रता द्वारा मन्सा को शक्तिशाली बनाए मन्सा द्वारा विश्व कल्याण की बेहद सेवा करनी है। बाबा कहते बच्चे - किसी भी सेवा में सफलता का आधार आप बच्चों की एकता और एकाग्रता है। अब भिन्नता को समाते हुए आपस में एकता से एक दो के समीप आना है। एकमत का वातावरण बनाना है, इसके लिए समाने की शक्ति धारण करो। आपके ब्राह्मण परिवार की विशेषता है अनेक होते भी एक क्योंकि यह एकता का वायब्रेशन ही सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना करेगा।

मीठे बाबा का विशेष इशारा है बच्चे, अब एकान्तवासी, अन्तर्मुखी बनो। कई बच्चों को एकान्त पसन्द नहीं आता। संगठन में रहना, हंसना, बोलना ज्यादा पसन्द आता है। यही बाह्यमुखता है लेकिन अभी समय ऐसा आ रहा है जो सर्व आकर्षणों के वायब्रेशन से अन्तर्मुख बनने का अभ्यास ही काम में आयेगा, क्योंकि अभी वानप्रस्थ अवस्था में जाने का समय है। वानप्रस्थी सदा एकान्त और सुमिरण में रहते हैं। तो आप सब बेहद के वानप्रस्थी बच्चे सदा एक के अन्त में अर्थात् निरन्तर एकान्त में स्मृति स्वरूप रहो, जितना सेवा की हलचल में आते हो उतना बिल्कुल अण्डरग्राउण्ड जाने का अभ्यास करो। जब भी समय मिले, इकट्ठा एक घण्टा वा आधा घण्टा समय नहीं भी मिलता तो बीच-बीच में समय निकाल 5 मिनट भी सागर के तले में चले जाओ, इससे संकल्पों पर ब्रेक लगा सकेंगे, फिर वाणी में आना अच्छा नहीं लगेगा।

बापदादा अब यही चाहते हैं कि मेरा हर बच्चा एकरस श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी, एकान्तवासी, अशरीरी, एकता स्थापक, एकनामी, एकॉनामी का अवतार, एक का प्रिय बन एकान्तप्रिय बनें। तो बोलो, ऐसा ही अटेन्शन रख तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हो ना!

समय प्रमाण बाबा के हर ब्राह्मण बच्चे के पास अब श्रेष्ठ स्थिति का मैडल होना चाहिए। स्थिति द्वारा ही सेवा करने से सफलता मिलती है। तो अभी परमात्म अवतरण का यादगार दिवस महाशिवरात्रि का पावन पर्व चारों ओर खूब धूमधाम से मनाना है। सभी को इनएडवांस शिवजयन्ती सो स्वर्णिम युग जयन्ती की बहुत-बहुत बधाई, मुबारक। मधुबन में तो ब्राह्मण परिवार की बहुत अच्छी रिमझिम चल रही है। देश विदेश के बाबा के अनेकानेक बच्चे अपने मधुबन घर में आकर खूब रिफ्रेश हो रहे हैं।

अच्छा - सभी को याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

एकान्तप्रिय बनो एकता और एकाग्रता को अपनाओ

1) एकता के साथ एकान्तप्रिय बनना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिनका अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा। एक प्रिय होने कारण एक की ही याद में रह सकता। एकान्तप्रिय अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाला ही एकान्त-प्रिय हो सकता है।

2) आपस के संस्कारों में जो भिन्नता है उसे एकता में लाना है। एकता के लिए वर्तमान की भिन्नता को मिटाकर दो बातें लानी पड़ेंगी – एक - एकनामी बन सदैव हर बात में एक का ही नाम लो, साथ-साथ संकल्पों की, समय और ज्ञान खजाने की इकॉनामी करो। फिर मैं समाकर एक बाप में सभी भिन्नता समा जायेगी।

3) एकमत का वातावरण तब बनेगा जब समाने की शक्ति होगी। तो भिन्नता को समाओ तब आपस में एकता से समीप आयेंगे और सर्व के आगे दृष्टान्त रूप बनेंगे। ब्राह्मण परिवार की विशेषता है – अनेक होते भी एक। यह एकता का वायब्रेशन सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना करेगा इसलिए विशेष अटेन्शन देकर भिन्नता को मिटाकर एकता लानी है।

4) अनेक वृक्षों की डालियाँ अब एक ही चन्दन का वृक्ष हो गया। लोग कहते हैं – दो चार मातायें भी एक साथ इकट्ठी नहीं रह सकती और अभी मातायें सारे विश्व में एकता स्थापन करने के निमित्त हैं। माताओं ने ही भिन्नता में एकता लाई है। देश भिन्न है, भाषा भिन्न-भिन्न है, कल्चर भिन्न-भिन्न है लेकिन आप लोगों ने भिन्नता को एकता में लाया है।

5) जो भी राजनेतायें वा धर्मनेतायें हैं उन्हों को "पवित्रता और एकता" इसका अनुभव कराओ। इसी की कमी के कारण दोनों सत्तायें कमजोर हैं। धर्मसत्ता को धर्मसत्ता हीन बनाने का विशेष तरीका है - पवित्रता को सिद्ध करना। और राज्य सत्ता वालों के आगे एकता को सिद्ध करना।

6) "एकता और एकाग्रता" - यह दोनों श्रेष्ठ भुजायें हैं, कार्य करने के सफलता की। एकाग्रता अर्थात् सदा निरव्यर्थ संकल्प, निर्विकल्प। जहाँ एकता और एकाग्रता है वहाँ सफलता गले का हार है। वरदाता को एक शब्द प्यारा है–'एकव्रता', एक बल एक भरोसा। साथ-साथ एकमत, न मनमत न परमत, एकरस, न और कोई व्यक्ति, न वैभव का रस। ऐसे ही एकता, एकान्तप्रिय।

7) 'अनेकता में एकता' तो प्रैक्टिकल में अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग लेकिन अनेकता में भी सबके दिल में एकता है ना! क्योंकि दिल में एक बाप है। एक श्रीमत पर चलने वाले हो। अनेक भाषाओं में होते हुए भी मन का गीत, मन की भाषा एक है।

8) साधारण सेवायें करना ये कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन बिगड़ी को बनाना, अनेकता में एकता लाना ये है बड़ी बात। बापदादा यही कहते हैं कि पहले एकमत, एक बल, एक भरोसा और एकता - साथियों में, सेवा में, वायुमण्डल में हो।

9) जैसे नारियल तोड़कर उद्घाटन करते हो, रिबन काटकर उद्घाटन करते हो, ऐसे एकमत, एकबल, एक भरोसा और एकता की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। यह पानी धरनी में डालो फिर देखो सफलता कितनी होती है।

10) अभी सब मिलकर एक दो की हिम्मत बढ़ाके यह संकल्प करो कि अब समय को समीप लाना ही है, आत्माओं को मुक्ति दिलानी ही है। लेकिन यह तब होगा जब सोचने को स्मृति स्वरूप में लायेंगे। जहाँ एकता और दृढ़ता है वहाँ असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

11) स्व उन्नति में, सेवा की उन्नति में एक ने कहा, दूसरे ने हाँ जी किया, ऐसे सदा एकता और दृढ़ता से बढ़ते चलो। जैसे दादियों का एकता और दृढ़ता का संगठन पक्का है, ऐसे आदि सेवा के रत्नों का संगठन पक्का हो, इसकी बहुत-बहुत आवश्यकता है।

12) संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव। एकता की शक्ति, हाँ जी, हाँ जी, विचार दिया, फिर एकता के बन्धन में बंध गये। यही एकता सफलता का साधन है।

13) प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने के पहले सिर्फ दो शब्द हर

कर्म में लाना। एक सर्व सम्बन्ध, सम्पर्क में आपस में एकता। अनेक संस्कार होते, अनेकता में एकता और दृढ़ता यही सफलता का साधन है। कभी-कभी एकता हिल जाती है। यह करे, तो मैं करूं.. नहीं। आपका स्लोगन है स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन, विश्व परिवर्तन से स्व परिवर्तन नहीं।

14) बापदादा चाहते हैं कि हर बच्चा एकरस श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी, एकान्तवासी, अशरीरी, एकता स्थापक, एकनामी, एकॉनामी का अवतार बने। एक दो के विचारों को समझ, सम्मान दे, एक दो को इशारा दे, लेन-देन कर आपस में संगठन की शक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करे क्योंकि आपके संगठन के एकता की शक्ति सारे ब्राह्मण परिवार को संगठन में लाने के निमित्त बनेगी।

15) एकान्त एक तो स्थूल होती है, दूसरी सूक्ष्म भी होती है। एकान्त के आनन्द के अनुभवी बन जाओ तो बाह्यमुखता अच्छी नहीं लगेगी। अव्यक्त स्थिति को बढ़ाने के लिए एकान्त में रुचि रखनी है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है।

16) एकान्तप्रिय वह होगा जिनका अनेक तरफ से बुद्धि योग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा, एक का प्रिय होने कारण एक की याद में रह सकता है। अनेक के प्रिय होने के कारण एक की याद में रह नहीं सकता, अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो, एक तरफ जुटा हुआ हो अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई – ऐसी स्थिति वाला जो होगा वह एकान्त प्रिय हो सकता है।

17) सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनायें एक से लेने वाला ही एकान्त-प्रिय हो सकता है, जब एक द्वारा सर्व रसनाएं प्राप्त हो सकती हैं तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या है? सिर्फ एक शब्द भी याद रखो तो उसमें सारा ज्ञान आ जाता, स्मृति भी आ जाती, सम्बन्ध भी आ जाता, स्थिति भी आ जाती। और साथ-साथ जो प्राप्ति होती है वह भी उस एक शब्द से स्पष्ट हो जाती। एक की याद, स्थिति एकरस और ज्ञान भी सारा एक की याद का ही मिलता है। प्राप्ति भी जो होती है वह भी एकरस रहती है।

18) जैसे कोई भी नई इन्वेन्शन अन्डरग्राउन्ड जाने से कर सकते हैं। वैसे आप भी जितना अन्डरग्राउन्ड अर्थात् अन्तर्मुखी रहेंगे उतना नई-नई इन्वेन्शन वा योजनायें निकाल सकेंगे। अन्डरग्राउन्ड रहने से एक तो वायुमण्डल से बचाव हो जायेगा, दूसरा एकान्त प्राप्त होने के कारण मनन शक्ति भी बढ़ेगी। तीसरा कोई भी माया के विघ्नों से सेफ्टी का साधन बन जाता है।

19) अपने को सदैव अन्डरग्राउन्ड अर्थात् अन्तर्मुखी बनाने की कोशिश करो। अन्डरग्राउन्ड भी सारी कारोबार चलती है वैसे अन्तर्मुखी होकर भी कार्य कर सकते हैं। अन्तर्मुखी होकरके कार्य करने से एक तो विघ्नों से बचाव, दूसरा समय का बचाव, तीसरा संकल्पों का बचाव वा बचत हो जायेगी। एकान्तवासी भी और साथ-साथ रमणीकता भी इतनी ही हो।

20) एकान्तवासी और रमणीकता! दोनों शब्दों में बहुत अन्तर है, लेकिन सम्पूर्णता में दोनों की समानता रहे, जितना ही एकान्तवासी उतना ही फिर साथ-साथ रमणीकता भी हो। एकान्त में रमणीकता गायब नहीं होनी चाहिए। दोनों समान और साथ-साथ रहें। अभी-अभी एकान्तवासी, अभी-अभी रमणीक, जितनी गम्भीरता उतना ही मिलनसार भी हो। मिलनसार अर्थात् सर्व के संस्कार और स्वभाव से मिलने वाला।

21) कोई भी सिद्धि के लिए एक तो एकान्त दूसरी एकाग्रता दोनों की विधि द्वारा सिद्धि को पाते हैं। जैसे आपके यादगार चित्रों द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वालों की विशेष दो बातों की विधि अपनाते हैं – एकान्तवासी और एकाग्रता। यही विधि आप भी साकार में अपनाओ। एकाग्रता कम होने के कारण ही दृढ़ निश्चय की कमी होती है। एकान्तवासी कम होने के कारण ही साधारण संकल्प बीज को कमजोर बना देते हैं इसलिए इस विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप बनो।

22) स्वयं का कल्याण करने के लिए वा स्वयं का परिवर्तन करने के लिए विशेष एकान्तवासी, अन्तर्मुखी बनो। नॉलेजफुल हो लेकिन पॉवरफुल बनो। हर बात के अनुभव में स्वयं को सम्पन्न बनाओ। किसका बच्चा हूँ? क्या प्राप्ति है? इस पहले पाठ के अनुभवीमूर्त बनो तो सहज ही मायाजीत हो जायेंगे।

23) जैसे कोई इन्वेन्टर कोई भी इन्वेन्शन निकालने के लिए एकान्त में रहते हैं। तो यहाँ की एकान्त अर्थात् एक के अन्त में खोना है, तो बाहर की आकर्षण से एकान्त चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ कमरे में बैठने की एकान्त चाहिए, लेकिन मन एकान्त में हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है।

24) एकान्तवासी बनना अर्थात् चारों ओर के वायब्रेशन से परे चले जाना। कई ऐसे होते हैं जिन्हें एकान्त पसन्द नहीं आता, संगठन में रहना, हंसना, बोलना ज्यादा पसन्द आता, लेकिन यह हुआ बाहरमुखता में आना। अभी अपने को एकान्तवासी बनाओ अर्थात् सर्व आकर्षण के वायब्रेशन से अन्तर्मुख बनो। अब समय ऐसा आ रहा है जो यही अभ्यास काम में आयेगा।

अगर बाहर की आकर्षण के वशीभूत होने का अभ्यास होगा तो समय पर धोखा दे देगा।

25) एकान्तवासी अर्थात् अनुभवी मूर्त। वर्तमान समय के प्रमाण अभी वानप्रस्थ अवस्था के समीप हो। वानप्रस्थी गुड़ियों का खेल नहीं करते हैं। वानप्रस्थी एकान्त और सुमिरण में रहते हैं। तो आप सब बेहद के वानप्रस्थी सदा एक के अन्त में अर्थात् निरन्तर एकान्त में सदा स्मृति स्वरूप रहो। यह है बेहद के वानप्रस्थी की स्थिति।

26) जितना सेवा की हलचल में आते हो उतना बिल्कुल अण्डरग्राउण्ड चले जाओ। कोई भी नई इन्वेंशन और शक्तिशाली इन्वेंशन अन्डरग्राउण्ड ही करते हैं तो एकान्तवासी बनना ही अन्डरग्राउण्ड है। जो भी समय मिले, इकट्ठा एक घण्टा वा आधा घण्टा समय नहीं मिलेगा लेकिन बीच में 5 मिनट भी मिले तो सागर के तले में चले जाओ। इससे संकल्पों पर ब्रेक लग सकेगी फिर वाणी में आना चाहेंगे तो भी नहीं आ सकेंगे।

27) एकान्तवासी अर्थात् सदा स्थूल एकान्त के साथ-साथ एक के अन्त में रहना। एकाग्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा का मैसेज उस आत्मा तक पहुँचा सकते हो। किसी भी आत्मा का आह्वान कर सकते हो। किसी भी आत्मा की आवाज को कैच कर सकते हो। किसी भी आत्मा को दूर बैठे सहयोग दे सकते हो।

28) एकान्तवासी का डबल अर्थ है। सिर्फ बाहर की एकान्त नहीं लेकिन एक के अन्त में खो जाना, एकान्त। नहीं तो सिर्फ बाहर की एकान्त होगी तो बोर हो जायेंगे, कहेंगे – पता नहीं दिन कैसे बीतेगा! लेकिन एक बाप के अन्त में खो जाओ। जैसे सागर के तले में चले जाते हैं तो कितना खजाना मिलता है। ऐसे एक के अन्त में चले जाओ अर्थात् बाप से जो प्राप्तियाँ हुई हैं उसमें खो जाओ।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"हर आत्मा के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखना, गिरे हुए को सहारा देना यही है सबसे बड़ा पुण्य" (गुल्जार दादी जी 01-09-09)

पाण्डव भवन की यह पाण्डव सेना है, पाण्डवों में भाई भी हैं तो बहिनें भी हैं। पाण्डव भवन की विशेषता चारों ओर फैली हुई है, तो पाण्डव भवन में आना अर्थात् चार धामों का चक्कर लगाना। जो चारों धाम करते हैं उनको कहते हैं इनकी यात्रा सफल हुई। तो पाण्डव भवन में आने से चार धाम की यात्रा हो जाती है। तो कितना भाग्य बाबा ने हम बच्चों को बना बनाया दिया है। हमें मालूम भी नहीं था कि हमारा कोई ड्रामा में ऐसा भाग्य है और वो भी कितना सहज भाग्य बनाया! भक्ति में तो कितनी मेहनत करनी पड़ती है, यहाँ तो सिर्फ बाबा दो बातें कहता है, एक कहता है अपने को पहले आत्मा समझके बाप को याद करो। दूसरी बात सेवा करो क्योंकि सेवा का मेवा हमारा 21 जन्म तक चलना है। ऐसा कोई भी नहीं होगा जो 21 जन्म की गैरंटी देवे कि राज्य भाग्य, सुख-शान्ति सब आपको प्राप्त होगा, यह सिवाए भगवान के और कोई गारन्टी दे नहीं सकता। ऐसा बाबा शब्द मन में आ गया, तो बाबा कहना और खुशी का खज़ाना अनुभव होना।

हमारा बाबा कौन है? जिसे सब पाना चाहते हैं लेकिन पा नहीं सकते और हमने तो बहुत सहज पा लिया जो दुनिया वाले भी आश्चर्य खाते हैं कि इन्हें भगवान मिल गया। भगवान हमको पढ़ा रहा है, भगवान की श्रीमत पर हम चल रहे हैं। भगवान हमारा बाप है। वैसे सर्व सम्बन्धों में प्राप्ति का सम्बन्ध बाप और बच्चे का ही होता है क्योंकि बाप को वर्सा देना ही है और बच्चा फुल वर्से का मालिक होता है। और सम्बन्धों में वर्से की बात नहीं होती है। बाप और बच्चे के सम्बन्ध में वर्सा है और हमारा वर्सा क्या है, वो तो हम सब जानते हैं। एक जन्म में 21 जन्म का अखुट राज्य, यह स्वप्न में नहीं था लेकिन अब तो अपने को अधिकारी समझते हैं तब तो हरेक यही कहता है कि हमारा बाबा, मेरा बाबा। अब मेरा कभी भूलता नहीं है। लेकिन कहाँ कहाँ कोई गलती करते हैं कि जिस समय कोई ऐसी परीक्षा आती है तो उस समय सहनशक्ति की कमी के कारण डगमग हो जाते हैं। ऐसे समय पर ही माया चतुर बन अकेला बना देती है इसीलिए बाबा कहते मैंने ऐसे समय के लिए आपको कम्बाइण्ड बनाया है। आप में कोई शक्ति कम

है, बाबा में तो है ना तो उस समय कम्बाइण्ड का फायदा लेना चाहिए।

क्यों, क्या, कौन, कब, कैसे इन पाँच शब्द को अगर आप सही रीति से यूज़ करो तो आप हरेक भाषण करने वाले बन सकते हो। माया भी इन्हीं शब्दों में आती है इसलिए बाबा कहते कि किस स्वरूप में यह शब्द यूज़ करने हैं या काम में लाने हैं वो अटेन्शन रखो। बाबा तो कहते सदा तुम्हारा चेहरा खिला हुआ होना चाहिए, बाबा हमारा थोड़ा-सा न खिला हुआ चेहरा देख नहीं सकता था, साकार में बाबा जब भी कभी ऐसा देखता तो तुरंत बुलाके हाथ पकड़के ऐसी कोई बात हंसी की बताके हंसा करके ही भेजता था क्योंकि बाबा को मुरझाया हुआ चेहरा बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। बाबा कहता था जिनका मूडऑफ है तो वो मूडमति है। सन्तुष्टता का खज़ाना सर्व खज़ानों को अपने तरफ आकर्षित करता है क्योंकि सन्तुष्ट आत्मा जैसा भी समय होगा वैसा अपना मूड बना सकता है। कुछ भी हो गया, कोई भी बात आ गयी लेकिन मन में समाना नहीं। राइट रॉंग को समझना और समाना इसमें फर्क है। रॉंग बात को समझके दिल में समाया तो रॉंग अन्दर गया, तो दिल दु:ख फील करेगा, उदासी, परेशानी होगी, मन अशान्त होगा इसलिए बाबा ने कहा समाओ नहीं, समझो भले। नॉलेजफुल के हिसाब से रॉंग राइट को समझो भले लेकिन दिल में नहीं समाओ। दिल में समाने से उस व्यक्ति के साथ उसी दृष्टि से हम देखेंगे, बोलेंगे, चलेंगे। दिल में जिसे समायेंगे वही बात याद आती रहेगी। मन में अच्छी बात को ही समाना है। मन में किचड़ा समाया रहेगा तो बाबा नहीं याद आयेगा। बाबा की याद से ही सर्व प्राप्तियाँ होंगी और सर्व खज़ानों से प्राप्ति वालों को ही खुशी होगी। तो समझदारी से हर आत्मा के प्रति शुभभावना, शुभकामना रख एक दो के स्नेही बनो तो सुखी रहेंगे, सन्तुष्ट रहेंगे।

हम ब्राह्मण बने ही हैं बेफिकर बादशाह बनने के लिए इतने बड़े संगठन में जो भी बातें होती है वो दिल में न रखें, कभी उसका चिंतन नहीं करना है, गिरी हुई आत्मा के प्रति घृणा रखते हैं तो जैसे हमने गिरे हुए को लात मारी। ऐसे को शुभ भावना, शुभ कामना... सहारा देना यह पुण्य का काम है। तो बाबा हमसे क्या चाहता है, वो हरेक को सोचना चाहिए, जो बाबा चाहता है उसी प्रमाण मेरी जीवन है? अभी 'तीव्र' पुरुषार्थ चाहिए वो भी 'सदा' चाहिए। इसके लिए हर कर्म करते हुए अपनी बीच-बीच में चेकिंग करेंगे तभी चेंज होंगे क्योंकि हमें सिर्फ कर्म नहीं करना है, कर्म और योग का बैलेंस रखके कर्मयोगी सो कर्मातीत बनना है।

बाबा क्या चाहता है? हरेक राजा बच्चा बने। स्व के ऊपर राज्य है तो वो स्वराज्य अधिकारी बच्चे हुए। आत्मा मालिक है, अपनी अवस्था में अच्छा है, अधिकारी है राज्य करने के तो सब ऑर्डर में चलेंगे, कभी कोई रिपोर्ट नहीं निकलेगी। अगर साथी सन्तुष्ट नहीं है तो असन्तुष्टता की बातें सुनके किसी के भी व्यर्थ संकल्प चलेंगे। योगयुक्त अवस्था नहीं हो सकती। योगयुक्त अवस्था माना डबल लाइट। आत्मा तो है ही लाइट, तो उसी स्थिति में स्थित होंगे। कोई फिकर नहीं, बेफिकर बादशाह। तो बाबा से प्यार है, बहनों से प्यार, दादियों से प्यार, आपस में प्यार... इसी प्यार ने तो आकर्षण किया है। प्यार ऐसी चीज़ है जो छोटी-सी चीज़ भी सन्तुष्ट कर देती है। बाबा से प्यार है माना जो उनकी विशेषता है उस पर न्यौछावर। बाबा से प्यार है तो उसका रिटर्न है जो बाबा ने कहा वो मैंने किया, बस।

हर मुरली में रोज़ हम सबको श्रीमत मिलती है – क्या करो क्या नहीं करो। याद करो तो कैसे करो, धारणा क्या करो। बाबा एक ही मुरली में चारों सबजेक्ट पर प्रकाश डालते हैं। अभी हमारे से बुरा काम तो नहीं होगा लेकिन रात्रि को जब सोने जाते हो उस समय सारे दिन का समाचार अच्छा या साधारण जो भी हुआ, उसे बाबा को सुनाकर खाली होकर सो जाओ तो नींद बहुत अच्छी आयेगी। फिर दूसरे दिन नया दिन, नई बातें। तो जो भी कुछ है वो सब बाबा को सुना दो। इससे खाली भी हो जायेंगे, बाबा से दृष्टि भी मिलेंगी और दिल से मेरा बाबा मेरा बाबा कहेंगे तो बाबा इमर्ज हो जायेगा। अपने को अकेले नहीं समझो। खुदा दोस्त समझ उससे बातें करो। जहाँ भी हैं वहाँ बाबा को दिल से याद करो तो बाबा हमारा सुनेगा और बाबा हमको रेसपांड देगा और मदद भी करेगा। लेकिन बुद्धि खाली हो तो टचिंग हो। बुद्धि क्लीन और क्लीयर होने से ऐसे लगेगा जैसे बाबा से रूबरू बात कर रहे हैं। बिल्कुल सामने जैसे बाबा बैठा है, हमारी बुद्धि को बाबा टचिंग कर रहा है। बाबा को बात देने से बात खत्म हो जाती है।

मन्सा सेवा करने से एक तो अपना मन बिजी रहेगा, दूसरा हम जहाँ भी रहते वहाँ का वायुमण्डल अच्छा बनाने में हम सहयोगी बनेंगे। तीसरा फायदा, जो दु:खी आत्मायें हैं उनको भी हम सकाश देंगे और इसमें हमको बिजी देख माया भी वापिस चली जायेगी इसलिए मन्सा सेवा करो या मुरली का ज्ञान का मनन करो। योग में तो रहना ही है लेकिन मनन करने से भी खुशी होती है। जो भी मुरली चली उसकी कोई भी 4-5 प्वाईन्ट्स अपने मन में नोट करो एक एक शब्द में फिर आपको बहुत फायदा होगा। तो मनन और मन्सा सेवा यह दोनों ट्रायल करके देखो तो माया आपेही दूर भाग जायेगी। अन्तर्मुखी रहो तो वह बाहर से ही चली जायेगी। सहजयोगी हो तो खाओ पिओ और याद में आगे बढ़ते जाओ। अगर क्यों, क्या, कैसे हो तो वो बाबा को दे दो फिर वापस नहीं लेना। अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"ऊंची प्रालब्ध तब बनती है जब पढ़ाई एक्यूरेट एक्शन में आती है, डायरेक्टर के इशारे पर पूरा ध्यान रहता है" (12-09-06)

आज की मुरली से किसी को कोई बात बुद्धि को टच जरूर हुई होगी। जब टच शब्द आता है तो बाबा का एक शब्द है माया को कहो "डोन्ट टच मी"। जो सयाने, समझदार होते हैं, माया उसके आगे आ नहीं सकती। माया ही घबरा जाती है। और कोई को माया को टच करना आसान है, बॉडी कान्सेस है ना। परन्तु जिसे नशा है कि बाबा ने मुझको एडाप्ट किया है, उसको माया कभी टच नहीं कर सकती। बाबा इसीलिए हमको सम्भाल के रखता है। पहले माँ बनता है, माँ-बाप एडाप्ट करते हैं। तो पहचान है, किसने एडाप्ट किया है। अगर इधर-उधर अटेन्शन गया, देखा सुना तो यह भी माया के संस्कार हैं।

कई बार माया भी खुशी देने की कोशिश करती है। कौन पढ़ाता है, क्या पढ़ाता है, कैसे पढ़ाता है, और पढ़ाई क्या है, जिसको यह चार बातें बुद्धि में फिट नहीं हैं, अच्छी तरह समझ में नहीं आयी हैं उसको फिर माया अपनी खुशी देती है। जो देवता धर्म की स्थापना करने वाला है उसको अपना शरीर नहीं है, लोन लिया हुआ है वो हमको पढ़ाता है। यह भी अक्ल चाहिए कि ब्रह्मा बाबा ने कहा या शिवबाबा ने कहा! ब्रह्मा बाबा कहेगा याद करो, शिवबाबा कहेगा चार्ट रखो।

वैसे परमात्मा को सिर्फ बाप कहते हैं, परन्तु संगम पर वह बाप, टीचर, सतगुरु तीनों है। तीनों रूप से अच्छी पालना, पढ़ाई और श्रेष्ठ श्रीमत मिल रही है। तो जितनी ऊंची पालना, पढ़ाई, श्रीमत मिल रही है उतना अटेन्शन है? देवता धर्म की स्थापना हो रही है। सतयुग में गुण-अवगुण की भेंट नहीं होगी। यहाँ भी हमारे अन्दर गुण अवगुण की भेंट न हो। सर्वगुण, ईश्वरीय गुण ईश्वर की तरफ से गिफ्ट हैं। गुण अवगुण की भेंट, यह अच्छा है, यह बुरा है.. न हो। हमारी स्थिति ऐसी हो। गुण अच्छे हैं तो क्या बड़ी बात है! इसमें बाबा ने ऐसी शक्ति भरी है, जो इसने बाबा के गुणों को खींच लिया है। उसके गुण नहीं हैं, अगर उसके गुण हैं तो कभी अवगुण भी निकल आयेंगे। बाबा हमारी ऐसी स्थिति बनाने चाहता है, गुणवान बनाने के धन्धे में लगा हुआ है। अपने गुण धारण करने के लिए बच्चा शक्ति लेवे। फिर बाप की शक्ति से काम करे। बाप सुख का सागर है, तुमको अतीन्द्रिय सुख होना चाहिए। सुख के झूले में अन्दर झूलता रहे। माया परछाई के रूप में भी न आये। बाबा की छत्रछाया हो। जिसके ऊपर बाप की छत्रछाया है, जिसके अन्दर धुन लगी हुई है, मैं कल्प पहले वाली हूँ। बाबा की याद में रहकर याद दिलाना, यह मेरा काम है और कोई काम नहीं है। इतनी शक्ति, इतना प्यार बाबा हम बच्चों में भर रहा है। बाबा किसका उद्धार कैसे भी करता है। कर्मों की गति गहन है, हमारे पास इतना सुख हो कि चलते-फिरते कहाँ भी पहुंच जाये तो वहाँ भी सुख हो जाये। कदम-कदम पर सेवा है परन्तु सेवा भी वही करेगा, जिसने पुरुषार्थ करके अपने विकर्मों का खाता उतारा है।

जो स्वभाव-संस्कार के वश है, चाहे अपने चाहे दूसरे के, वो दास-दासी हैं। देवता धर्म की स्थापना पवित्रता के बल से हो रही है, बाबा ने मुझे एडाप्ट किया है इतना गुणवान बनाने के लिए, और मैं अभी तक कोई स्वभाव के वश हूँ! आसुरी संस्कार खतरनाक है, स्वभाव में मधुरता नहीं है, सच्चाई नहीं है, सबके प्रति कल्याण का, रहम का भाव नहीं है तो राजाई पद कैसे पायेंगे? राजाई पद पाने वाले को दिन-रात याद रहेगा कि मेरा पालनहार कौन है? जिसने एडाप्ट किया है उसने पालना भी ऐसी दी है, जो 84 जन्म भी ख्याल नहीं आयेगा कि मुझे कौन पालेगा! श्रेष्ठ कर्म करने का भाग्य मिला है। कोई भी बुरा, अशुद्ध कर्म किया नहीं है तो पुराने पाप कट गये। काटना तो योग से है परन्तु सच्चे दिल से निरहंकारी बनकर सेवा की है, देह अभिमान में नहीं आये हैं, तो पाप कटते गये हैं। अगर यह भी आता कि मैंने किया, मुझे करना है... तो यह भी माथे में दर्द पैदा कर देता, वह ऊंच पद कैसे पा सकेंगे।

सारा समय ध्यान है कि डायरेक्टर क्या कहता है, ऊपर वाले का इशारा क्या है, एक्टर्स क्या करते हैं, उसके बारे में नहीं सोचता है, वो एक्टर है। संगमयुग पर हम पार्टधारी हैं, कोई कम पार्ट है क्या! बुराईयों के वश, संग के वश पता नहीं

पड़ता है बाबा क्या पढ़ाता है। प्रेजेन्ट की पढ़ाई, फ्यूचर हमारे हाथ में दे रही है। पढ़ाई एक्शन में आ रही है। अगर एक्शन में एक्यूरेट नहीं आयी तो प्रालब्ध नहीं है। बुद्धि से पढ़ा, दिल में बैठा, कर्म में आया, कर्म किसने कराया, उसने कराया। कर्म में भी वो साथी है और करने में साक्षी है, दृष्टा, उपराम। करते हुए भी ऊपर वाले के साथ रहता है। ऐसी स्थिति में रहना माना राज्य पद पाने का ध्यान रखना। एक्टर यही तो मिनट-मिनट का ध्यान रखते हैं। मेरा पार्ट भगवान स्मृति दिला रहा है। कौन हूँ, किसने अपना बना के मुस्कराना सिखा दिया! खुश रहो, एक्यूरेट रहो, साफ रहो, सच्चे रहो। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"ज्ञानी तू आत्मा का पहला-पहला गुण है – सहनशीलता"

1) बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा लेसन देते कि हे बच्चे इस ज्ञान की मंजिल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा का बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण है?

2) बाबा ने कहा बच्चे दु:ख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है? ज्ञानी तू आत्मा का गुण है समान रहना। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को ज्ञानी तू आत्मा देखते - माना हमारे अन्दर ड्रामा की सारी नालेज है। हर आत्मा के सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो की स्टेजेस की भी नालेज है। जब नालेज है तो नालेज की शक्ति के आधार पर समान रहने की शक्ति स्वत: ही आ जाती है।

3) जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर तूने बाल से युवा वा युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुयें होना यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है। तो हम क्यों कहें ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में वा गर्मी में दुख क्यों देती! हम जानते हैं यह नेचर का गुण है। सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज करें। हम जान गये अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान। सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है। अभी तमोप्रधान है इसलिए प्रकृति पर कभी गुस्सा नहीं आता। कभी भी हम ऐसे नहीं लड़ते - ए सर्दी तू मुझे दुख क्यों देती? किससे लड़ेगे? जब बुद्धि में आता यह तो प्रकृति का धर्म है तो उससे लड़ेने नहीं जाते। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं। वह तो आयेंगी ही। मैं उससे दुखी क्यों हूँ! जैसे प्रकृति का दुख सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मै उसमें क्यों लडूं! हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है।

4) कभी-कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दुख देती तो गुस्सा क्यों नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती लेकिन मैं सोचूं कि मैने उसे कितना मान दिया है। एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मैं दाता बनूं या लेवता बनूं? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला... मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते! यह सवाल हरेक अपने से पूछे।

5) कहा जाता तू प्यार करो तो सब करें। कहते मैं तो सबको प्यार देता लेकिन आगे वाला मुझे ठुकराता। इसमें हमेशा समझो यह मेरा हिसाब-किताब है। 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करना है। जहाँ प्यार होगा वहाँ सब मान देंगे। शुभ भावना रहेगी, शुभ चिन्तन चलेगा फिर उनके लिए मेरा वरदान रहेगा।

अगर मैं इस स्थिति पर रहूंगी तो सब मेरी स्तुति करेंगे। अगर मैं ही अपनी स्थिति पर नहीं रहती तो कोई भी मेरी क्या स्तुति करेगा।

6) हरेक अपने से पूछो - पहले मेरी स्तुति मेरे 10 मंत्री (कर्मेन्द्रियां) करते? जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करता? जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करें अर्थात् आर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। बाबा ने कहा 3 मंत्री हैं मुख्य। मन बुद्धि और संस्कार। तो मेरा मन सदा मेरे चरणों में रहता अर्थात् मैं जो पवित्र आत्मा हूँ, मेरा मन सदा ऐसा ही स्वच्छ पवित्र और सदा ऊंचा रहता? मेरा पहला मंत्री मेरे आर्डर में है? आर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वत: रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ? यह संकल्प उठाना भी तो अशुद्धता है। अपने से पूछो मैं अपनी महानता की ऊंची स्थिति पर रहता? जब मैं उसी स्थिति पर रहूँगी तो सब मेरा मान करेंगे। कई कहते हैं मेरी वृत्ति अच्छी नहीं, मेरी वृत्ति चंचल होती है, अगर मैं यही रिपोर्ट करती तो मैं दूसरे से क्या मान माँगू। पहले तो अपनी रिपोर्ट बन्द करो। तू पहले अपने मन्त्री से तो प्यार पाओ पीछे दूसरे से मांगो। अगर वृत्ति चंचल है माना मन्त्री कन्ट्रोल में नहीं है।

7) कहते हैं दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। अब दस शीश वाले रावण को स्वाहा करने के लिए हमारे बाबा ने यह रुद्र यज्ञ रचा है। इसमें ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बच्चों ने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। तो हरेक पूछे मैने अपने दस राक्षसों को स्वाहा किया है? इन्द्रिय जीत बनने का मतलब है अपनी कर्मेन्द्रियों को दिव्य बनाना। तो चेक करो कि मेरे कान दिव्य बने हैं? या अभी तक कनरस सुनने का शौक है? परचिन्तन पतन की ओर ले जायेगा। फिर ऐसा परचिन्तन वाला मान पा सकता है? हमारे यह नयन दूसरे को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से, बाबा के रत्न देखने के लिए हैं, अगर यह नयन बुरी दृष्टि से देखते, द्वेष की दृष्टि से देखते तो क्या यह नयन मुझे मान देंगे! अगर नयनों ने बुरी नजर से देखा, द्वेष दृष्टि डाली तो मेरे नयन ही मुझे अपमानित करते। दुख देते फिर दूसरे से मान कैसे मिलेगा।

8) कहते यह मुझे इतना प्यार नहीं देता। मैं पूछती तुमने अपने को कितना प्यार किया? मैं अपने संकल्प को शुद्ध रखूंगी तो प्यार मिलेगा। मेरी बुद्धि अगर परचिन्तन में घूमती, सत्यता को छोड़, स्वच्छता को छोड़ असत्यता की ओर जा रही है तो पहले मेरी बुद्धि ने ही मुझे प्यार नहीं दिया। अगर बुद्धि ही प्यार नहीं करती तो दूसरे क्या करेंगे! पहले देखो - मेरे संस्कार मुझे रिस्पेक्ट देते हैं? मैंने अपने संस्कारों की चंचलता को स्वाहा किया है? अगर मेरे संस्कार ही मुझे रिस्पेक्ट नहीं देते तो दूसरे क्या देंगे!

9) जिसमें जरा भी मूड ऑफ की आदत है, उसे मान मिल नहीं सकता। मूड ऑफ माना ऑफ। उसे कौन सी प्रेम की ऑफर मिलेगी! उसे कौन आफरीन देगा? अगर कहते ऑफ होने की आदत है, तो आदत शब्द ही बुरा है। दिव्यता माना गुण। मेरा गुण है, दिव्य रहना। जहाँ दिव्यता है वहाँ मान अपमान का सवाल समाप्त हो जाता। जहाँ मांगते हो कि मान मिले, वहाँ वह दूर हो जाता है। आज के राजनेतायें मान के लिए चेयर मांगते, आज मिलती कल चेयर उठाकर फेंक देते क्योंकि है ही प्रजातन्त्र। हम तो राजाओं के राजा हैं, हम कभी मांग नहीं सकते। राजा कभी नहीं कह सकता कि यह चपरासी मेरी इज्जत गंवाता है। राजा का तो आर्डर चलता। तो पूछो मैं राज्य-अधिकारी हूँ या मैं अपने चपरासियों के अधीन हूँ?

10) कई कहते हैं क्या करूं - गुस्से में हाथ चल गया। अरे चल गया या तूने चलाया? कहते हैं न चाहते भी गाली निकल गई। अरे मुख किसका गंदा हुआ! जिसने गाली दी उसका मुख बासी हुआ। तू बासी मुख वाले को मुंह क्यों देते! तुम उनसे मुख मोड़ लो। तुम उनके साथ गंदा क्यों बनते हो!

11) कई दीवालों पर बने हुए गन्दे चित्रों को देख कहते मेरी आंख खराब हो गई। अरे वह तो जड़ है, मैं चैतन्य, मैं अगर कहूँ मुझे यह पिक्चर का चित्र अपनी तरफ खींचता तो मेरा वह राजा हुआ, मैं प्रजा हो गई। एक दीवाल का चित्र मेरा चित्त काट लेता। वह चित्र मेरा दिलाराम बन गया। जिसने दिलाराम बाप से दिल तुड़ा दी। जो किसी पर खिंच जाता, आकर्षित होता वह है दिलबेकू। दिल बेचने वाला दिलबेकू नहीं बनो। दिलाराम बाप के दिलाराम बच्चे बनो। बाबा ने तो कहा है तुम शरीर निर्वाह लिए कर्म करो, क्या चित्र देखने की, नाविल्स पढ़ने की छुट्टी दी है! कहते हैं दिल उदास होती तो पढ़ लेता हूँ। पढ़ोगे, देखोगे तो जरूर वह बुद्धि को डिस्टर्ब करेगा। जब पहले जन्म से मर गये फिर वह पहली बातें क्यों याद करते, मरते क्यों नहीं? अच्छा - ओम् शान्ति।